लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 3, संख्या: 4; जनवरी-जून, 2022

साथ

✍ बर्णाली देवी

मैंने चार दिन पहले अपनी मासी को खोया। वे छिहत्तर साल की थीं और वृद्धावस्था से सम्बंधित कुछेक बीमारियों से जूझ रही थीं। मासी बचपन से ही मेरे लिये प्रिय थीं और मैं भी उनके लिए उनकी बेटी से कम नहीं थी। बचपन में पापा की डाँट और माँ की मार से बचाने वाली वही थीं। मासी अर्थात माँ जैसी, वे मेरे लिए मेरी माँ से कम नहीं थीं। वे बहुत शर्मीली और स्थिर स्वभाव की थीं। उनका नम्र एवं विनीत स्वभाव ही मुझे हमेशा से उनके प्रति आकर्षित करता था। उन्होंने मुझे हमेशा अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया था और उन्हीं के प्रोत्साहन और सहयोग की वजह से मैं विदेश जाकर पढ़ पाई। मेरे हर एक फ़ैसले में उन्होंने मेरे साथ दिया और मेरे साथ खड़ी रहीं।

उन्हीं की एक दोस्त थीं, जिन्हें मैं प्यार से 'आरती मासी' बुलाती थी। वे भी मुझे बहुत प्यार करती थीं। दोनों ही सहेलियों का स्वभाव बिल्कुल एक-जैसा था, पर फर्क बस इतना था कि आरती मासी अपने परिवार के साथ नहीं रहती थीं और मेरी मासी हमारे साथ परिवार-सहित रहती थीं। जब आरती मासी के पति का देहान्त हुआ, तब उनका बेटा आया था उन्हें अपने साथ विदेश ले जाने के लिए। पर आरती मासी अपना देश छोड़कर नहीं जाना चाहती थीं, खासकर अपनी प्रिय सहेली मेरी मासी को छोड़कर।

जब मेरी मासी बीमार पड़ीं, तब उन्होंने आरती मासी को बुला भेजा। आरती मासी हमेशा हमारे घर आया करती थीं और दोनों सहेलियाँ बैठकर खूब बातें करती थीं। अपने बचपन की दोस्ती के उन किस्सों को याद करती थीं, उन यादों को ताजा करती थीं। उन दोनों के बीच जा के कभी मैं भी बैठ जाती और उनके उन किस्सों को सुनकर खूब आनन्द लेती थी।

एक दिन आरती मासी ने कहा था कि वे इस बात से बहुत दु:खी हो जाती हैं कि वे मेरी मासी के साथ, एक-साथ इस दुनिया में क्यों नहीं आयीं। तब मेरी मासी ने कहा था- "तो क्या हुआ अगर हम एक साथ नहीं आयीं, पर हम रहेंगे तो हमेशा एक साथ ही।" उसके बाद दोनों सहेलियाँ हँस पड़ीं, मानो वह कुछ अलग ही रोचक बात हो। मैं सोचती थी यह भी

शायद उनकी कोई मज़ाक-भरी बात रही होगी और मैं भी हँस पड़ती थी।

आरती मासी का चार दिन पहले देहान्त हुआ; हाँ, उसी दिन जिस दिन मेरी मासी का देहान्त हुआ था। आज जब मैं, उस दिन को याद करती हूँ, तब मैं इस बात की गहराई को समझ पाती हूँ। दोनों ने एक साथ रहने का वादा अंत तक निभाया और शायद दोनों अब भी एक साथ ही कहीं होंगी।

संपर्क-सूत्र :

चतुर्थ छमाही, गौहाटी विश्वविद्यालय